स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड

मानव्य विद्याशाखा अंतर्गत पीएच्.डी. (हिंदी) उपाधि

हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा

“राजेंद्र यादव द्वारा संपादित ‘हंस’ पत्रिका की लघुकथा का अनुशीलन”

शोधछात्र

विशाल गुंडेराव बिरादार

एम.ए. (हिंदी)

शोधनिर्देशक

डॉ.मनोहर भंडारे

(एम.ए. (हिंदी), एम.फिल., पीएच्.डी., सेट)

सहाय्यक प्राध्यापक,

हिंदी विभाग

श्री हावगीस्वामी महाविद्यालय,उदगीर

जि.लातूर 413517

अनुसंधान केंद्र

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर

मार्च, 2016

"राजेंद्र यादव द्वारा संपादित 'हंस' पत्रिका की लघुकथा का अनुशीलन"

प्रास्ताविक :

'हंस' जनचेतना का प्रगतिशील मासिक है जिसके संपादक मुंशी प्रेमचंद रहें और जिसकी स्थापना 1930 में हुई। प्रेमचंद के बाद 'हंस' को बेटे अमृतराय ने चलाया। प्रस्तुत पत्रिका कुछ दिन तक बंद भी रही किंतु 31 जुलाई, 1986 को अर्थात मुंशी प्रेमचंद जन्मदिन के उपलक्ष्य में राजेंद्र यादव ने संपादकीय कार्य अपने जिम्मे लिया। उन्होंने लोकतांत्रिक और सामाजिक प्रतिबद्धता को अनिवार्य मानकर 1986 से 2014 तक संपादकीय कार्य किया। राजेंद्र यादव के संपादकीय काल में अनेक समसामायिक मुद्दों को उठाया। कई बार वे विवादों के घेरे में भी रहें। उन्होंने कभी भी खुद को आम-आदमी और लोकतांत्रिकता से कटने नहीं दिया। वैसे राजेंद्र यादव का संपादकीय ही पढ़ने के लिए लोग 'हंस' जैसी पत्रिका खरीदते थे। 'मुड-मुड के देखता हूँ' के आठ खंडों में यादवजी के संपादकीय संकलित हैं । उन्होंने जन और जनसंस्कृति से जुड़कर जड़ता पर बेबाकी से प्रहार किया है। वैसे राजेंद्र यादव स्वभाव से ही विद्रोही थे। लेकिन उनका विरोध प्रेमचंदीय विचारधारा से प्रतिबद्ध रहा है। हिंदी भाषिक पट्टी में ही नहीं बल्कि सारे भारत में 'हंस' के संपादकीय ने लोगों को नींद से जगाया। उनकी पत्रिका में आम-आदमी के प्रति जितनी प्रतिबद्धता थी उसी मात्रा में उन्होंने बुद्धिवादी पाखंडता पर कड़ा प्रहार भी किया। वैसे उनमें गजब का लोकतांत्रिक साहस था। उन्होंने 'हंस' पत्रिका से स्त्री विमर्श, दलित विमर्श को महत्त्वपूर्ण जगह देने की पहल की । उन्ही के कारण मैत्रेय पुष्पा, प्रभा खेतान जैसी लेखिका समाज के सामने आयी। कई दलित साहित्यकारों के साहित्यकारों को 'हंस' से प्रकाशित किया। इस संदर्भ में उन्होंने 'हंस' के द्वारा कई विशेषांक निकाले। जैसे स्त्री, दलित और मुस्लिम विशेषांक वैसे कथासम्राट मुंशी प्रेमचंद और राजेंद्र यादव को कहानी के प्रति विशेष रुची थी इसी कारण 'हंस' से अधिकत्तर कहानियाँ प्रकाशित हुई। राजेंद्र यादव ने अपने समय में 'हंस' के द्वारा जो लघुकथाएँ प्रकाशित की है वह अपने-आप में अनुपम प्रयोग है। समाजमानस पर कम समय में अधिक प्रभाव करनेवाली विधा यानी लघुकथा है। हंस से प्रकाशित होनेवाली

लघुकथाओं को किसी एक विषय की मर्यादा नहीं थी, इसी कारण उनके द्वारा प्रकाशित 325 अंकों में हजारों लघुकथाएँ प्रकाशित हुई हैं। वैसे 'हंस' के विभिन्न पक्षों पर अनुसंधान हुआ है किंतु लघुकथा उपेक्षित विषय रहा है इस दृष्टि से मैंने राजेंद्र यादव द्वारा 'हंस' पत्रिका की लघुकथा को अपने शोध का विषय बनाया। प्रस्तुत विषय उस शोध के अभाव की पूर्ति है।

विषय चयन की प्रेरणा :

मेरे बचपन में मुझे दादा-दादी छोटी-छोटी कथाएँ सुनाती थी जिसे सुनकर बड़ा आनंद मिलता था। जैसे-जैसे मैं बड़ा होने लगा वैसे-वैसे मेरे भीतर दादी माँ के संस्कार से कहानी के प्रति रुची बढ़ने लगी। महाविद्यालयीन जीवन में अनेक कहानिकारों की कहानियाँ पढ़ी। इसी दौर में 'हंस' की लघुकथाएँ पढ़ने में आयी। उस पत्रिका की लघुकथाएँ पढ़ने के लिए पुराने अंक ढुँढ ढुँढकर पढ़ने लगा। उस बहाने मेरे पास छह सौ से अधिक लघुकथाओं का संकलन भी हुआ। 'हंस' की लघुकथा का चयन भी हंस की भाँति है। इसके विषय में प्रचुर मात्रा में विभिन्नता है और नवीनता भी। इस संदर्भ में मेरे मार्गदर्शक डॉ.मनोहर भंडारे जी से कई बार विचार-विमर्श किया और उन्होंने कई सुझाव दिये। फिर अंतिमत: "राजेंद्र यादव द्वारा संपादित 'हंस' पत्रिका की लघुकथा का अनुशीलन" शीर्षक से शोध विषय का चयन हुआ।

विषय का महत्त्व :

राजेंद्र यादव और हंस कार्यालय तथा 'हंस' और राजेंद्र यादव का संपादकीय हमेशा साहित्यिक क्षेत्र में चर्चा के विषय रहे हैं। प्रेमचंद ने कहा था-"साहित्य राजनीति की मशाल होती है" उसी भाँति राजेंद्र यादव के संपादकीय ने कार्य किया। वे हमेशा कालसंपृक्त और लोकसंपृक्त रहते हुये समसामायिक मुद्दों पर ही चर्चा करते थे। इस कारण 'हंस' समय से आगे चलनेवाली पत्रिका थी। उसी भाँति उसमें संकलित लघुकथाएँ भी अपने समाज की पाखंडता पर प्रहार कर समाज में चेतना जगानेवाली लघुकथा को शोध का विषय बनने में विषय की महत्ता सिद्ध होती है। 'हंस' की लघुकथा पर शोध होना समय और समाज की मांग है क्योंकि सभी लघुकथाएँ लोकतांत्रिक मूल्यों पर अधिष्ठित है। संवैधानिक दृष्टि से 'हंस'की लघुकथा लोकजागर का कार्य करती है। इसीलिए इस विषय पर शोध होना अपने-आप में अलग महत्त्व है।

शोध विषय का उद्देश :

1) राजेंद्र यादव और 'हंस' की संपादकीय को समझना है।

2) 'हंस' की लघुकथा की वैचारिक पृष्ठभूमि को जानना है।

3) 'हंस' की लघुकथा का चयन किन आधारों पर किया है उसे समझना है।

4) 'हंस' की लघुकथा में सामाजिक प्रतिबद्धता कितनी है?

5) 'हंस'की लघुकथा का विषयगत और शिल्पगत अध्ययन करना।

अंतर्विद्याशाखीय अध्ययन :

'हंस' की लघुकथाओं को समझना हो तो भारतीय संविधान को समझना होगा, भारतीय राजनीति को समझना होगा। इसीलिए प्रस्तुत विषय का अध्ययन करते समय राज्यशास्त्र का भी अध्ययन करना होगा। साथ ही अनेक लघुकथाओं पर विभिन्न विचारधारा का प्रभाव है। उस विचारधारा को समझने के लिए दर्शनशास्त्र का भी अध्ययन करना पड़ेगा इसीलिए प्रस्तुत विषय अंतर्विद्याशाखीय अध्ययन के अंतर्गत आता है।

पूर्व अनुसंधान :

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के सांतापा चव्हाण ने डॉ.अर्जुन चव्हाण के मार्गदर्शन में "राजेंद्र यादव द्वारा संपादित 'हंस' पत्रिका में चेतना के विविध आयाम" शीर्षक से शोध कार्य पूरा किया गया है।

विषय की मौलिकता :

'हंस' पत्रिका के विभिन्न विषयों पर शोध हुआ है किंतु लघुकथा पर स्वतंत्र शोध नहीं हुआ है इसलिए लघुकथा को ही शोध का विषय बनाया है। इस दृष्टि से इस विषय की अपनी मौलिकता है।

अनुसंधान की पद्धतियाँ :

प्रस्तुत विषय का अनुसंधान करते समय वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक अनुसंधान पद्धतियों का प्रयोग किया जायेगा। तथ्यात्मक और वस्तुनिष्ठ पद्धति से अनुसंधान के निष्कर्ष निकाले जाएंगे साथ ही 'हंस' से संबंधीत विद्धवजनों से विचार विमर्श भी किया जाएगा।

अनुसंधान की दृष्टि से मैंने इस शोध को निम्नलिखित षष्ठ अध्यायों में विभाजित किया है-

प्रथम अध्याय - 'हंस' पत्रिका और राजेंद्र यादव

1.1 'हंस' पत्रिका की वैचारिक पृष्ठभूमि

1.2 राजेंद्र यादव का संपादकीय

1.3 'हंस' की सामाजिक प्रतिबद्धता

1.4 'हंस' और राजेंद्र यादव के विद्रोही तेवर

1.5 प्रेमचंदीय विचारधारा से प्रतिबद्ध राजेंद्र यादव

1.6 'हंस' और लोकतांत्रिकता

1.7 राजेंद्र यादव का बेबाक लेखन

1.8 समसामायिक विमर्श और राजेंद्र यादव

1.9 'हंस' की संवैधानिक प्रतिबद्धता

1.10 वैचारिक आंदोलन और 'हंस'

1.11 'हंस' और लेखकीय प्रतिबद्धता

1.12 'हंस' द्वारा सामाजिक जडता पर प्रहार

1.13 'हंस' और आम-आदमी

1.14 जन संस्कृति और 'हंस' पत्रिका

1.15 'हंस' द्वारा पूंजीवाद का विरोध

1.16 'हंस' और दलित विमर्श

1.17 'हंस' और स्त्री विमर्श

1.18 'हंस' और अल्पसंख्याक विमर्श

1.19 'हंस' और आदिवासी विमर्श

1.20 राजनीतिक हलचल और 'हंस'

1.21 धर्म आडंबर और 'हंस' संपादकीय

द्वितीय अध्याय - राजेंद्र यादव द्वारा संपादित 'हंस' पत्रिका की लघुकथा में व्यंग्य

2.1 व्यंग्य की अवधारणा और स्वरूप

2.2 व्यंग्य और लघुकथा

2.3 व्यंग्य के विविध आयाम

2.3.1.1 सामाजिक व्यंग्य

2.3.1.2 पारिवारिक व्यंग्य

2.3.1.3 वैवाहिक संबंध और व्यंग्य

2.3.1.4 दहेज प्रथा पर व्यंग्य

2.3.1.5 खोखले संबंध और व्यंग्य

2.3.1.6 जातिव्यवस्था पर व्यंग्य

2.3.1.7 सामाजिक दोगली वृत्ति पर व्यंग्य

2.3.1.8 मध्यवर्गीय मानसिकता पर व्यंग्य

2.3.2 राजनीतिक व्यंग्य

2.3.2.1 नेता पर व्यंग्य

2.3.2.2 चुनावी षडयंत्र पर व्यंग्य

2.3.2.3 न्याय व्यवस्था पर व्यंग्य

2.3.2.4 सांप्रदायिक दंगे फसाद पर व्यंग्य

2.3.2.5 कुर्सी और मंत्री पर व्यंग्य

2.3.2.6 राजनेता के दिखावटी रूप पर व्यंग्य

2.3.2.7 खोखले प्रजातंत्र पर व्यंग्य

2.3.3 धार्मिक व्यंग्य

2.3.3.1 धर्म की पाखंडता पर व्यंग्य

2.3.3.2 ईश्वर पर व्यंग्य

2.3.3.3 साधुओं पर व्यंग्य

2.3.3.4 धर्म के नाम पर शोषण और व्यंग्य

2.3.3.5 भूतप्रेत पर व्यंग्य

2.3.4 आर्थिक और सांस्कृतिक व्यंग्य

2.3.4.1 आर्थिक शोषण तंत्र पर व्यंग्य

2.3.4.2 आर्थिक विषमता पर व्यंग्य

2.3.4.3 समाज को खंडित करनेवाली संस्कृति पर व्यंग्य

2.3.4.4 संस्कृति के अज्ञान पर व्यंग्य

तृतीय अध्याय - राजेंद्र यादव द्वारा संपादित 'हंस' पत्रिका की लघुकथा में विद्रोह

3.1 व्यवस्था के प्रति नकार का स्वर

3.2 जाति से विद्रोह

3.3 पुरुषीय मानसिकता से विद्रोह

3.4 परंपरागत विचारप्रणाली के माता-पिता से विद्रोह

3.5 पुरातन संस्कार से विद्रोह

3.6 पूंजीवाद से विद्रोह

3.7 मध्यवर्गीय मानसिकता से विद्रोह

3.8 गरीबी से विद्रोह

3.9 सामंती मानसिकता से विद्रोह

3.10 धार्मिकता से विद्रोह

3.11 ह्रासोन्मुख राजनीति से विद्रोह

3.12 भ्रूणहत्या से विद्रोह

3.13 युवक का विद्रोह

3.14 आम-आदमी का विद्रोह

3.15 स्त्री का विद्रोही रूप

3.16 वंश की मानसिकता से विद्रोह

3.17 उपभोगी प्रवृत्ति से विद्रोह

3.18 पाखंडी अध्यात्म से विद्रोह

3.19 स्त्री हिंसा से विद्रोह

3.20 अनीति से विद्रोह

3.21 अस्पृश्यता से विद्रोह

चतुर्थ अध्याय - राजेंद्र यादव द्वारा संपादित 'हंस' पत्रिका में विभिन्न विमर्श

4.1 'हंस' की लघुकथा और स्त्री विमर्श

4.2 'हंस' की लघुकथा और दलित विमर्श

4.3 'हंस' की लघुकथा और आदिवासी विमर्श

4.4 'हंस' की लघुकथा और अल्पसंख्याक विमर्श

4.5 'हंस' की लघुकथा और सर्वहारा विमर्श

4.6 'हंस' की लघुकथा और मीडिया विमर्श

4.7 'हंस' की लघुकथा और किसान विमर्श

4.8 'हंस' की लघुकथा और मजदूर विमर्श

4.9 'हंस' की लघुकथा और बाजार विमर्श

4.10 'हंस' की लघुकथा और देह विमर्श

पंचम अध्याय - राजेंद्र यादव द्वारा संपादित 'हंस' पत्रिका की लघुकथा का शिल्पगत अध्ययन

5.1 सपाट शिल्प

5.2 पेचदार शिल्प

5.3 बिंबात्मक शिल्प

5.4 विकासात्मक शिल्प

5.5 प्रयोगात्मक शिल्प

5.6 आंचलिक शिल्प

5.7 उत्प्रेरक विकास

5.8 गवेषणात्मक शिल्प

5.9 संवेदनात्मक शिल्प

5.10 परिवेशजन्य शिल्प

5.11 ध्वन्यात्मक शिल्प

5.12 पौराणिक शिल्प

5.13 शाश्वत शिल्प

5.14 आकस्मिक शिल्प

5.15 शिल्प और साहित्यकार का व्यक्तित्त्व

5.16 शिल्प और कथानक

5.17 शिल्प और लेखकीय वैशिष्टता

5.18 भाषा की सांकेतिकता

5.19 विचारोत्तेजक भाषा

5.20 भाषा और चेतना

5.21 रुपात्मक भाषा

5.22 संवाद और भाषा

5.23 काव्यात्मक भाषा

षष्ठम् अध्याय - मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

आधार ग्रंथ

शोधछात्र *शोध-निर्देशक*

विशाल गुंडेराव बिरादार **डॉ.मनोहर भंडारे**